IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय किसान आत्महत्या क्यों कर रहे है?

शोध निर्देशक
डॉ0 रामानन्द सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर.
श्री दुर्गा जी पी0 जी0 कालेज
चण्डेश्वर, आजमगढ़

शोधार्थिनी
आरती मौर्या
शोध छात्रा
श्री दुर्गा जी पी0 जी0 कालेज
चण्डेश्वर, आजमगढ़

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध में भारतीय किसान की दशा और उनकी समस्याओं को उजागर करने के संदर्भ में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। किसी भी कृषि प्रधान देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था वहां की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है । भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का कितना महत्व है, इसे इस तथ्य से समझा जा सकता है कि यहा की 74.3 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है तथा 60प्रतिशत जनसंख्या कृषि के द्वारा आजीविका उपार्जित करती है । भारत की राष्ट्रीय आय का 40 प्रतिशत भाग कृषि कार्यो से संबधित है । जबकि सभी उद्योगो में आधे से अधिक उद्योग गांव में उत्पादित कच्चे माल के पूर्ति द्वारा चलतें है । देश में कृषि ही रोजगार का सबसे बड़ा आधार है ।

अधिकांश विद्वानो का विचार है कि ''ग्रामीण कृषि एक लाभप्रद व्यवसाय न हो कर एक जीवन विधि है'' भारत में किसानो के द्वारा कृषि को एक लाभप्रद व्यवसाय के रूप में नही देखा जाता बल्कि उनका अपनी भूमि और अपने व्यवसाय के प्रति अपना भावनात्मक लगाव भी है यही कारण है कि कृषि किसान के जीवन का अंग बन गयी है । वास्तविकता तो यह कि किसान बिना कृषि कार्य किये अपने को सुखी और संतुष्ट महसुस नही करता । कृषि और भूमि से किसानो के लगाव को स्पष्ट करते हुए डॉ. दूबे ने लिखा है कि ''किसानो को अपनी भूमि और अपने पशुओं से भारी लगाव होता है कठिनाई के समय यदि कृषक को अपना खेत या गाय–बैल बेचने पड़े तो वह दिन उस परिवार के लिए सबसे अधिक शोक का दिन होता है । किसान उस कार्य को बहुत भारी मन से करता है कई दिनों तक परिवार में उदासी छायी रहती है और घर की स्त्रियां ऐसे समय में सबसे अधिक दुखी दिखाई देती है । भारतीय कृषक भूमि को अपनी माँ मानते है और भूमि को छोड़ना उसके लिए ठीक वैसा ही है जैसा कि अपनी माँ से बिछुड़ना''

कृषि जो भारतीय अर्थव्यवस्था का मूलाधार थी, वही अब किसानो के गले का फंदा कैसे बन गई यह चिंता का विषय है मुझे लगता है कि जो सामाजिक इज्जत–प्रतिष्ठा के पैमाने है, जो ठोस रूप से सामाजिक–आर्थिक हैसियत के अनुसार बनते है, वे पैमाने ही किसी की आत्महत्या की वजह बनते है ।

समस्याएं

भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिसमें आधिकांश कृषक छोटी जोत के किसान है विगत कुछ वर्षो से किसानो की समस्याएं बढ़ती जा रही है जिसमें जलवायु परिवर्तन के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे है जिसके चलते भारी संख्या में किसान पलायन भी कर रहे है । गावों में खेती का जो काम था वह भी मौसम की मार, किसान की क्षमताएं घटने तथा तथाकथित राजनीति से आधिक जाति आधारित चेतना के कारण मजदूरो को आकर्षित नही करता।

आज भारत में किसानो के अन्दर असंतोष बढ़ता जा रहा है उनमे निराशा साफ झलकती है। अब भूमि उतनी उपजाऊ नही है जितने पहले थी जहा पहले रसायनो का प्रयोग शून्य था वहा उसकी पैठ बढ़ी है । बाजार भी असफल हो रहे है कर्ज बढ़ता जा रहा है और फसले भी अब ज्यादा सुरक्षित नही है अब उर्वरक वितरण के समय का दृश्य हदय विदारक हो गया है । एक मात्र स्वतंत्रजीवी अन्नदाता किसान भिखारी बना दिया गया है । बैंक तथा साहूकारों की अमानवीय व्यवस्था ने उसे आत्महत्या के कगार पर ला खड़ा कर दिया है । कृषि प्रधान देश में देश का किसान बेघर हो रहा है और दुनिया के बड़े उद्योग पति प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे है । यह दुनिया भर से लिए जाने वाले ऋण के बल पर अपने प्रगति के आकड़े और प्रति व्यक्ति प्रतिशत आय की बढ़ोतरी के दावे कर रहा है।

पिछले एक दशक से, एक आर्थिक समस्या से ज्यादा उन्होने अब राजनीति और मानवीय आयामो को स्वीकार कर लिया है पिछले कुछ अध्ययनो व आकड़ो से पता चलता है कि किसानो की सबसे बड़ी समस्या उनके उत्पादो का कम कीमत या उचित मूल्य न मिल पाना है।

भारत में किसान आत्महत्या के कई कारण मौजूद है । जिस पर हम चर्चा करेगे:

1. **मौसम और जलवायु के मुद्दे:** पिछले कई वर्षो से मौसम में काफी परिवर्तन रहा है लगभग सामान्य वर्षा होने पर भी स्थिति वैसी ही बनी हुई है । देश का भू–भाग 56 प्रतिशत बर्फ से ढकी हुई नदियों के पानी पर निर्भर है । भारत में इन दिनो मौसम बिलकुल ही अनियमित हो गये है, कभी सही समय पर वर्षा न होने के कारण सूखा पड़ जाता है तो कभी निरन्तर वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति बन जाती है ।
   इस स्थिति के कारण, इन दिनों में अनुभवी किसानो का भी नुकसान हो रहा है। जबकि वे अपनी फसल को सोच समझ कर सही समय पर लगाते है तथ्य यह है कि फसल को नुकसान पहुचाने वाले कीड़े, जंगली घास और फसल में लगने वाली बिमारियाँ विकसित हो रही है । जिससे की किसानों की चिन्ताओ में बढ़ोतरी हुई है ।
   ऐसी परिस्थिति के बावजुद भी किसानो का यह विश्वास नही टूटा कि खेती घाटे का सौदा है यहा का किसान विश्वास रखता है कि धरती माँ है तो पेट भरेगी ही । इस संदर्भ में **किशन पटनायक** का यह मत इस बात की पुष्टि करता है कि ''भारत के अर्थव्यवस्था में इस बात की मान्यता नही मिली कि खेती घाटे का धंधा है।''
2. **कीमतो में असंतोषजनक प्राप्ति:** किसानो में असंतोष की समस्या का एक बड़ा कारण बाजार है । भारत में कानून व्यवस्था पुरानी है और बार–बार एक किसान के पास उसके उत्पाद को विनियमित बाजारों में बेचने के अलावा कोई विकल्प नही है, जहा बिचौलिया लोगो को अधिक लाभ प्राप्त होता है। ये कभी–कभी आधे से ज्यादा तक का लाभ कमा लेते है यदि इनका सफाया किया जाय तो किसान अपने उत्पादो को बेहतर दामो पर बेच सकता है ।
3. **बीज की गुणवत्ता, कीटनाशक और उर्वक:** भारत में किसानों की अनभिज्ञता के कारण कई बार खराब गुणवत्ता वाले बीज को बोना पड़ता है तथा उनके द्वारा खराब गुणवत्ता वाले उर्वक और कीटनाशको का प्रयोग किया जाता है। इन सभी कारको में अकसर फसले पूरी तरह से नष्ट हो जाती है । ज्यादातर अच्छी गुणवत्ता वाले बीज इतने महगें होते है कि छोटे और मध्यम जोत वाले किसान उन्हे खरीद नही पाते । जहा तक खाद का प्रश्न है, छोटे किसानो को गोबर का प्रयोग करना पड़ता है परन्तु उनके लिए यह भी समस्या है कि गोबर को वह इर्धन के रूप में प्रयोग करते है जिसके कारण उनके पास पर्याप्त गोबर उपलब्ध नही हो पाता । गरीब किसानो के लिए ज्यादातर रासायनिक उर्वरको को खेतो में प्रयोग करना भी असम्भव है
4. **किसानो का लिया हुआ कर्ज:** भारत में आज भी अधिकतर किसान अशिक्षित है जिसके कारण वे अपने आस–पास के साहूकारो से कर्ज उधार लेते है जो कि 70 प्रतिशत से 120 प्रतिशत तक सूद (ब्याज) लेते है जबकि यही बैंको से लेने पर 12 से 17 प्रतिशत तक देना होता है । कभी–कभी ये देनदार साहूकार कर्ज न चुका पाने पर किसान के खेत या जमीनो को अपने नाम करा लेते है । जिससे किसान के पास आत्महत्या के सिवा कोई और चारा नही होता। सरकार को इस बारे में कड़ा कदम उठाना चाहिए ।
   धार्मिक अंधविश्वास, राजनीतिक नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण वह अपनी जीवन यात्रा आत्महत्या करके समाप्त कर रहा है वर्तमान राजनीति में किसान की को अहमियत नही है । इस संदर्भ में एक फाँस का वक्तव्य है कि ''गंजे को कंघी से क्या काम? पहले ही लिए गये ऋण को अदा ना कर सका फिर दूसरा ऋण कहा से मिलेगा? यह संजय गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी, ये गांधी वो गांधी वाली हलकट योजनाएं। कुआं पहले खोदो ऋण बाद में देगी सरकार । कुएं के निर्माण के लिए सब बेच डालो, घर–द्वार चूल्हा–चक्की, गाय–बैल, औरतों के गहनें और औरतों को भी.....आखिर–आखिर तक उसी कुएं में कूद कर जान दे दो।'' राहत कार्य के अभाव में आखिर भय भूख और तंग हाली से बेहाल होकर किसान आत्महत्याएं करते है ।
5. **परिवार का दबाव व जिम्मेदारी :** भारतीय परम्परा में परिवार का एक विशेष स्थान है । परिवार के सदस्यो की आवश्यकता व जिम्मेदारी का भार उठाने वाला किसान जब यह आभास करने लगता है कि वह परिवार के सदस्यो का भरण पोषण सुचारू रूप से नही कर पा रहा है तब उसे अपनी लाचारी व गरीबी पर तरस आने लगती है । वह निराशा के चलते कुंठा का शिकार होने लगता है और धीरे–धीरे उसे यह अहसास हो जाता है कि वह अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नही कर सकता है , तब वह आत्महत्या कर लेता है ।
6. **अपर्याप्त भण्डारण सुविधाएं :** हर साल पूरे भारत में कृषि उत्पादन का 30–40 प्रतिशत फसले खराब हो जाती है क्योकि पर्याप्त शीत भण्डार नही है मौद्रिक शब्दों में उस नुकसान की कीमत 35 हजार करोड़ रूपये तक होती है । वर्ष भर फलो और सब्जियों जैसे खाद्य पदार्थों की उच्च माँग रहती है । हालांकि असामान्य वर्षा के कारण ये फसले नष्ट हो जाती है जिन किसानो के पास शीत भण्डार नही है, उन्हें अपनी उपज जितनी जल्दी हो सके बेचनी पड़ती है ताकि वे सड़ने न पाये । इसका मतलब यह है कि वे अपनी उपज से कम कीमतो पर बेची जाती है क्योंकि माँग से अधिक आपूर्ति होती है । एक छोटे से किसान के लिए एक शीत भण्डार का स्थापन और संचालन करना बहुत महंगा और मुश्किल है ।
7. **कृषि श्रमिकों का अभाव:** इन दिनो कृषि परिश्रम के रूप में मानी जाती है , विशेष रूप से आकस्मिक श्रम। निर्माण और उद्योग जैसे क्षेत्र पहले से ही लोगो को रोजगार दे रहे है, जोकि कृषि के अलावा विभिन्न प्रकार के कार्यो में लगे हुए है एक कारण यह भी है पिछले कुछ दशक शहरी प्रवास बहुत बढ़ गया । इन दिनों किसानो के बच्चो को संस्थागत शिक्षा प्राप्त करने और अन्य नौकरियो में शामिल होने में अधिक रूचि है। सरकार ने न्यूनतम समर्थन कीमतों की व्यवस्था भी शुरू कर दी है । जिससे मुद्रा प्रसार और मजदूरी में भी वृद्धि हुई है । इसका मतलब यह है कि छोटे भूमि कृषकों को पर्याप्त कृषि श्रम की नियुक्ति के मामले में ज्यादा छूट नही मिलती ।

भारत में किसानो के सामने कुछ अन्य समस्याएं है:

- उचित सिचाई का अभाव
- मशीनीकरण का अभाव
- अपर्याप्त परिवहन सुविधाए
- वाणिज्यिक बैकों विमुखता के कारण अच्छे नियम और शर्तो पर ऋण प्राप्त करने में समस्याएं ।

निष्कर्षः ऊपर के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इन कमियो और मूद्दो का प्रभाव बहुत ज्यादा है जो कि अधिकांश लोगो को पता होगा या होना चाहिए। घाटे में जा रही खेती के कारण किसान अब बदहाली से ऊबकर आत्महत्याएं करने को ही एक मात्र विकल्प के रूप में देख रहे है । निरन्तर कुपोषण के कारण लोग बिमार पड़ते है गरीबी व बिमारी की पीड़ा एक साथ न झेल पाने के कारण किसान आत्महत्या कर लेता है । एक किसान के लिए आत्महत्या के कगार पर एक आपदा के मद्देनजर प्रमुख चिन्ता अपने बच्चो को ऋण देने से दूर रखना है और स्वंय के द्वारा कर्ज चुकाने का प्रबन्ध करने से है ।

आज किसानो का यह हाल है कि ''कोई यह नही पूछता कि कर्ज अदा करने वाला अदा कर पाने की स्थिति में है या नही। न भगवान, ना शास्त्र, ना प्रशासन, ना कोई कोर्ट, ना कचहरी ''

''नेशनल फार्मस यूनियन के सर्वे के अनुसार 70 से ज्यादा कृषि आधारित व्यवसाय मुनाफा कमा रहे है लेकिन इस खाद्य श्रृखला में किसान ही है जो घाटे में चल रहे है । निष्कर्ष यह है कि यह वैश्विक अर्थव्यवस्था का नया रूप है जिसमें किसान को हाशिए पर धकेला जा रहा है।''

संदर्भ ग्रथ सूचीः

1. संजीव, फॉस, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2015 पृ0 175 ।
2. किसान आन्दोलन दशा और दिशाः किशन पटनायक पहला संस्करण 2006।
3. ग्रामीण समाजशास्त्र, डॉ0 जी0 के0 अग्रवाल, डॉ0 एस0 एस0 पाण्डेय ।
4. डॉ0 श्यामाचरण दूबे, एक भारतीय गांव
5. भारतीय किसान, अभयचरण दास (कलकत्ता 1881)
6. भारतीय दर्पण, 25 जुलाई 1873
7. सामाजिक समस्याएं द्वितीय संस्करण, राम आहूजा।
8. किसान आत्महत्या यथार्थ और विकल्प, प्रो. संजय नवले ।